सामाजिक विज्ञान

कक्षा 7

(सामाजिक और राजनीतिक जीवन)

अध्याय 4: लड़के और लड़कियों के रूप में बड़ा होना

To get notes visit our website

mukutclasses.in

अभ्यास के प्रश्न

प्रश्न 1. साथ में दिए गए कुछ कथनों पर विचार कीजिए और बताइए कि वे सत्य हैं या असत्य? अपने उत्तर के समर्थन में एक उदाहरण भी दीजिए।

(क) सभी समुदाय और समाजों में लड़कों और लड़कियों की भूमिकाओं के बारे में एक जैसे विचार नहीं पाए जाते।
उत्तर: सत्य
उदाहरण: कुछ समाजों में लड़कियाँ भी खेल-कूद और पढ़ाई में लड़कों के बराबर भाग लेती हैं, जबकि कुछ पारंपरिक समाजों में उन्हें केवल घर के कामों तक सीमित रखा जाता है।

(ख) हमारा समाज बढ़ते हुए लड़कों और लड़कियों में कोई भेद नहीं करता।
उत्तर: असत्य
उदाहरण: अक्सर देखा जाता है कि लड़कों को देर रात बाहर जाने की अनुमति मिल जाती है, जबकि लड़कियों को जल्दी घर लौटने को कहा जाता है।

(ग) वे महिलाएँ जो घर पर रहती हैं, कोई काम नहीं करतीं।
उत्तर: असत्य
उदाहरण: घर पर रहने वाली महिलाएँ खाना बनाना, सफाई, बच्चों की देखभाल, बुजुर्गों की सेवा जैसे कई ज़िम्मेदार काम करती हैं, जिन्हें आमतौर पर "काम" नहीं माना जाता।

(घ) महिलाओं के काम, पुरुषों के काम की तुलना में कम मूल्यवान समझे जाते हैं।
उत्तर: सत्य
उदाहरण: एक महिला पूरे दिन घर का काम करती है, लेकिन उसे "कमाने वाला" नहीं समझा जाता, जबकि पुरुष को उसकी नौकरी के कारण अधिक महत्व दिया जाता है।

प्रश्न 2. घर का काम अदृश्य होता है और इसका कोई मूल्य नहीं चुकाया जाता। घर के काम शारीरिक रूप से थकाने वाले होते हैं। घर के कामों में बहुत समय खप जाता है।
अपने शब्दों में लिखिए कि 'अदृश्य होने' 'शारीरिक रूप से थकाने ' और 'समय खप जाने' जैसे वाक्यांशों से आप क्या समझते हैं? अपने घर की महिलाओं के काम के आधार पर हर बात को एक उदाहरण से समझाइए |

उत्तर:

- **'अदृश्य होना':** इसका मतलब है कि घर का काम दिखाई नहीं देता और कोई उसका भुगतान नहीं करता, जैसे—झाड़ू-पोंछा, खाना बनाना, कपड़े धोना।

  उदाहरण: मेरी माँ सुबह 5 बजे उठती हैं, सबके लिए नाश्ता और लंच तैयार करती हैं, लेकिन कोई इसे 'काम' नहीं मानता।

- **'शारीरिक रूप से थकाने वाला':** इसका मतलब है कि ये काम मेहनत भरे होते हैं, जिसमें शरीर थक जाता है।

  उदाहरण: पूरे घर की सफाई करना, बाल्टी भर-भर कर कपड़े धोना व खाना पकाना — ये सब भारी काम हैं।

- **'समय खप जाने वाला':** घर के काम पूरे दिन चलते रहते हैं और इनमें बहुत समय लगता है।

  उदाहरण: मेरी माँ सुबह से रात तक काम में लगी रहती हैं — रसोई, बच्चों का होमवर्क, बुजुर्गों की देखभाल — दिन भर में उन्हें आराम का समय नहीं मिलता।

MUKUTclasses

प्रश्न 3. ऐसे विशेष खिलौनों की सूची बनाइए, जिनसे लड़के खेलते हैं और ऐसे विशेष खिलौनों की भी सूची बनाइए, जिनसे केवल लड़कियाँ खेलती हैं। यदि दोनों सूचियों में कुछ अंतर है, तो सोचिए और बताइए कि ऐसा क्यों है ? सोचिए कि क्या इसका कुछ संबंध इस बात से है कि आगे चलकर वयस्क के रूप में बच्चों को क्या भूमिका निभानी होगी?

उत्तर:

लड़कों के खिलौने:

- कार
- ट्रक
- बंदूक
- सुपरहीरो एक्शन फिगर
- रोबोट
- क्रिकेट बैट/बॉल

लड़कियों के खिलौने:

- गुड़िया
- किचन सेट
- मेकअप किट
- सिंगिंग डॉल
- सिलाई सेट

अंतर और कारण:
यह अंतर इसलिए है क्योंकि समाज शुरू से लड़कों को बाहरी, ताकतवर भूमिकाओं के लिए और लड़कियों को घरेलू और देखभाल वाली भूमिकाओं के लिए तैयार करता है। ये खिलौने वयस्क जीवन की भूमिकाओं को प्रतिबिंबित करते हैं — जैसे लड़कियों को घर संभालना और लड़कों को बाहर काम करना।

प्रश्न 4. अगर आपके घर में या आस-पास, घर के कामों में मदद करने वाली कोई महिला है तो उनसे बात कीजिए और उनके बारे में थोड़ा और जानने की कोशिश कीजिए कि उनके घर में और कौन-कौन हैं? वे क्या करते हैं? उनका घर कहाँ है? वे रोज़ कितने घंटे तक काम करती हैं? वे कितना कमा लेती हैं? इन सारे विवरणों को शामिल कर, एक छोटी-सी कहानी लिखिए।
उत्तर:

शीला दीदी की कहानी:

MUKUTclasses

शीला दीदी हमारे घर में सफाई और बर्तन का काम करती हैं। उनका घर हमारे मोहल्ले के पास झुग्गी बस्ती में है। उनके परिवार में उनके पति और दो बच्चे हैं। उनके पति एक निर्माण मजदूर हैं और बच्चे सरकारी स्कूल में पढ़ते हैं।

शीला दीदी सुबह 6 बजे से 10 बजे तक चार घरों में काम करती हैं और फिर अपने घर जाती हैं। शाम को फिर एक-दो घंटे काम पर आती हैं। रोज़ लगभग 8 घंटे काम करती हैं। महीने में वे लगभग ₹7000-₹8000 तक कमा लेती हैं।

वह कहती हैं कि काम बहुत थकाऊ होता है, लेकिन बच्चों की पढ़ाई और घर का खर्च चलाने के लिए वह यह सब करती हैं। वह चाहती हैं कि उनकी बेटी पढ़-लिखकर टीचर बने ताकि उसे यह मेहनत न करनी पड़े।